ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा स्रेधत।। ऋ. 7/32/9
हिंसा - मन, वचन और कर्म से किसी के प्रति वैर मत करो।
Never injure anyone in thought, word and deed.

वर्ष 38, अंक 33 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 29 जून, 2015 से रविवार 5 जलाई, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द : 192 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार आर्यसमाज द्वारा संचालित है, था और हमेशा रहेगा : सम्पत्ति आर्यसमाज की है और आर्यसमाज की ही रहेगी

न सरकार को देने का कोई प्रस्ताव है और न ही कोई प्रश्न

विश्वविद्यालय कर्मचारियों का हित सर्वोपरि, किन्तु आर्यसमाज की प्रभुता से समझौता नहीं

- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के अधिकारियों का संयुक्त वक्तव्य

स्वामी श्रद्धानन्द की विरासत से कोई खिलवाड़ नहीं होने देंगे - आचार्य विजयपाल-धर्मपाल आर्य

विश्वविद्यालय के कर्मचारी वर्ग द्वारा इसकी मांग समय-समय पर उठाई जाती रही है कि गुरुकुल कांगड़ी को केन्द्रीय विश्वविद्यालय बना दिया जाए। गत दिनों यू.जी.सी. द्वारा जारी किए गए एक पत्र जिसमें भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित संशोधन अधिनियम 2014-2015 के द्वारा ये कहा गया था कि सभी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सम विश्वविद्यालय अपने संविधान में इनके अनुरुप संशोधन कर लेवें। उन संशोधन अधिनियम 2014-15 की भाषा का गलत अर्थ ले लेने के कारण इस प्रकार के विवाद का जन्म हुआ।क्योंकि उसमें संशोधन करने की तिथि 30 जून तक लिखी गई थी, इसलिए जल्दबाजी में, जोकि इस महत्वपूर्ण विषय के लिए अनावश्यक थी, किन्तु जल्दबाजी का हवाला देकर और गलत अर्थों का उपयोग करके अवैध रूप से पारित एक गलत प्रस्ताव को यू.जी.सी. को भेजा गया जो पूरी तरह से विश्वविद्यालय प्रशासन की संवैधानिक भूल एवं गलती है। इस विषय में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी भी पूर्णत: सभाओं के निर्णय के साथ मजबूत सहमति व्यक्त कर चुके है एवं गलत ढंग से पारित किए गए अवैध प्रस्ताव के विरुद्ध भी गुरुकुल प्रशासन को अपना विरोध, पत्र द्वारा भेज जा चुके हैं तथा इस चूक को सुधार करने सम्बन्धी दिशा निर्देश भी दिए जा चुके हैं। ज्ञातव्य है कि दिल्ली एवं हरियाणा सभा ने भी इस प्रस्ताव को अवैध बताते हुए इसका स्पष्ट विरोध व्यक्त कर दिया है।

गत दिनों दैनिक 'अमर उजाला' के हरिद्वार संस्करण में छपी खबर आर्यजगत में विभिन्न माध्यमों से फैली। हो भी क्यों न आखिर आर्यसमाज के गौरव, आर्य समाज के सर्वोच्च शिक्षण संस्थान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को केन्द्र सरकार को सौंपने सम्बन्धी विषय था। इस सम्बन्ध में हम यह बताना चाहेंगे कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एवं सम्बन्धित संस्थान आर्यसमाज की सम्पत्ति हैं प्रबन्ध की दृष्टि से तीन प्रान्तों की आर्य प्रतिनिधि सभाएं सम्मिलित रूप से इसकी स्वामिनी सभाएं हैं। स्वामिनी सभाओं के चाहे बिना, उनके प्रस्तावों के बिना, स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित इस गौरवशाली संस्था को सराकर को सौंप देने का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता। अभी इस प्रकार का प्रस्ताव न सरकार की ओर से प्रस्तावित है, और न ही सभाओं का प्रस्ताव है। किन्तु यदि भविष्य में कभी सरकार वास्तव में इस गुरुकुल को अपने अधीन करना चाहे तो आर्यसमाज की शक्ति आज भी इतनी अधिक है कि इसके लिए सरकार को सोच पाना भी मुश्किल होगा।

इस विषय पर विश्वविद्यालय संचालक आर्य प्रतिनिधि सभाओं पर आरोप-प्रत्यारोप होने लगे थे। किन्तु यह सब वास्तविकता से कोसों दूर थे। वास्तविकता यह है कि विश्वविद्यालय के कर्मचारी वर्ग द्वारा इसकी मांग समय-समय पर उठाई जाती रही है कि गुरुकुल कांगड़ी को केन्द्रीय विश्वविद्यालय बना दिया जाए। गत दिनों यू.जी.सी. द्वारा जारी किए गए एक पत्र जिसमें भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित संशोधित अधिनियम 2014-2015 के द्वारा ये कहा गया था कि सभी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सम विश्वविद्यालय अपने संविधान में इनके अनुरुप संशोधन कर लेवें। उन संशोधन अधिनियम 2014-15 की भाषा का गलत अर्थ ले लेने के कारण इस प्रकार के विवाद का जन्म हुआ।क्योंकि उसमें संशोधन करने की तिथि 30 जून तक लिखी गई थी, इसलिए जल्बाजी में, जोकि इस महत्वपूर्ण विषय के लिए अनावश्यक थी, किन्तु जल्दबाजी का हवाला देकर और गलत अर्थों का उपयोग करके अवैध रूप से पारित एक गलत प्रस्ताव को यू.जी.सी. को भेजा गया जो पूरी तरह से विश्वविद्यालय प्रशासन की संवैधानिक भूल एवं गलती है। इस विषय में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी भी पूर्णत: सभाओं के निर्णय के साथ मजबूत सहमति व्यक्त कर चुके है एवं गलत ढंग से पारित किए गए अवैध प्रस्ताव के विरुद्ध भी गुरुकुल प्रशासन को अपना विरोध पत्र द्वारा भेजा जा चुका है तथा इस चूक को सुधार करने सम्बन्धी दिशा निर्देश भी दिए जा चुके हैं। ज्ञातव्य है कि दिल्ली एवं हरियाणा सभा ने भी इस प्रस्ताव को अवैध बताते हुए इसका स्पष्ट विरोध व्यक्त कर दिया है।

इस विषय पर बुलाई गई अवैध बैठक में सभा के नामित सदस्य श्री विनय आर्य न तो सम्मिलित हुए और अपितु उन्होंने इसका पुरजोर विरोध करते हुए इस प्रस्ताव को किसी भी सूरत मे किसी भी रूप में आगे न भेजने सम्बन्धी पत्र लिखा। क्योंकि यह प्रस्ताव प्राकृतिक रूप से गलत, संविधान विरुद्ध, अवैध प्रकृति का था। किन्तु हठधर्मिता के चलते यू.जी.सी. के पत्र की तिथि का हवाला देते हुए यह बैठक की गई। श्री विनय आर्य ने अपने पत्र में इस प्रस्ताव को रिव्यू करने के लिए समिति का गठन करने का प्रस्ताव रजिस्ट्रार महोदय से किया, जिसकी प्रति कुलाधिपति एवं कुलपति महोदय को भी प्रेषित की गई। इस विषय में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक हुई। बैठक के उपरान्त संयुक्त वक्तव्य में कहा गया कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार आर्यसमाज द्वारा संचालित है, था और रहेगा। यह आर्यसमाज की सम्पत्ति है और आर्यसमाज की ही रहेगी। इसे न सरकार को देने का कोई प्रस्ताव है और न ही कोई प्रश्न। उन्होंने कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि हरियाणा ऐसे किसी भी प्रस्ताव का चाहे वह वैध ही क्यों न हो समर्थन नहीं कर सकती। और फिर यह तो पूरी तरह से अवैध एवं शून्य प्रस्ताव है। दिल्ली एवं हरियाणा सभा इसका पुरजोर विरोध करती हैं।

इस विषय में गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति, वरिष्ठ वैदिक विद्वान एवं पूर्व सासंद डॉ. रामप्रकाश ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द की इस गरीमापूर्ण विरासत को किसी भी हालत में सरकार को सौंपने का प्रश्न नहीं है। उन्होंने गुरुकुल प्रशासन को अपनी गलती सुधारने के लिए एवं प्रस्ताव को पुनरीक्षण करने के लिए समिति गठित करने के लिए निर्देश दिए हैं, जोकि बारीकी से अधिसूचना में दिए गए बिन्दुओं

- शेष पृष्ठ 2 पर

आत्मा ज्ञान और सौन्दर्य के साथ उदित होता है

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।
ऋ. 1/6/3, साम. उ. 6/3/14, अ. 20/69/19
ऋषि :- **मधुच्छन्दाः।।** देवता- **इन्द्रः।।** छन्दः -**गायत्री।।**

शब्दार्थ - हे इन्द्र आत्मन्! तू **मर्या** - इस मरण-शील **अकेतवे**- और ज्ञान रहित अवस्था- वाले शरीर में **केतुं कृण्वन्** - ज्ञान और जीवन लाता हुआ तथा **अपेशसे** - इस अरूप, असुन्दर शरीर में **पेशं कृण्वन्** - रूप -सौन्दर्य लाता हुआ **उषद्भि** - अपनी जागरण - शक्तियों के साथ **सं अजायथाः** - उदय होता है - पुनर्जागरण और पुनर्जन्म में उदय होता है।

विनय - यह शरीर तो मर्य है, मुर्दा है। इस समय भी मुर्दा है। जब इस शरीर को अर्थी पर उठाकर जलाने के लिये ले जाया जाता है, उस समय यह शरीर जैसा मुर्दा होता है वैसा ही यह अब भी है, परन्तु इस समय यह मुर्दा इसलिये नहीं दीखता, क्योंकि इन्द्र (आत्मा) ने अपनी चेतनता, अपनी सुन्दरता इसमें बसा रखी है। हे इन्द्र आत्मन्! जब यह शरीर सुषुप्तावस्था में होता है तब तुम ही इसमें से अपनी जागरण-शक्तियों को समेट लेते हो, अपने में खींच लेते हो, अतः तुरन्त हमारा चलना-फिरना, बोलना आदि सब व्यापार बन्द हो जाता है। सदा चलने वाले मन के भी सब संकल्प-विकल्प बन्द हो जाते हैं। यह शरीर जड़वत् हो जाता है और जब तुम फिर अपनी जागरण रश्मियों को शरीर में फैला देते हो तो फिर मनुष्य उठ बैठता है, सोचना-विचारना शुरू हो जाता है, मनुष्य फिर चलने-बोलने लगता है। इस 'अकेतु' शरीर में फिर चेतना दिखने लगती है-उसका खोया हुआ जाग्रत्-रूप फिर उसमें आ जाता है। हे इन्द्र! सुषुप्ति में तो तुम अपनी जागरण-शक्तियों को केवल समेट लेते हो, पर जब तुम इस शरीर को छोड़ ही देते हो तब क्या होता है? तब यह शरीर अपने असली रूप में मिट्टी के ढेर के रूप में दीख पड़ता है। न इसमें ज्ञान होता है और न रूप। हे इन्द्र! इस मिट्टी के बर्तन में अमृत होकर तुम ही भरे हुए हो। इस मिट्टी में जो रूप, सुडौलता आ गयी है, सुन्दर अवयव-संनिवेश हो गया है यह तुम्हारे व्यापने से हुआ है और इस मिट्टी की मूर्ति में शव की अपेक्षा जो इतनी चेतना दिखाई देती है वह तुम्हारे समाने से ही हुई है। यह शरीर जो मुर्दा होने पर इतना अपवित्र समझा जाता है कि इसे छू लेने से स्नानादि शौच करना पड़ता है वही असल में मुर्दा शरीर, हे परम-पावन इन्द्र! इस समय तुम्हारे समाये रहने के कारण, तुम्हारे पवित्र संस्पर्श से इतना पवित्र हुआ- हुआ है। तुम्हारा इतना अद्भुत माहात्म्य है। मनुष्य तुम्हारे इस माहात्म्य को क्यों नहीं देखता? आज हम स्पष्ट देख रहे हैं कि इन सब मुर्दा-जड़ शरीरों में चेतनता लाते हुये और इन अरूपों में रूप-सौन्दर्य प्रदान करते हुये तुम्हीं अपनी जाग्रत्-शक्तियों के साथ उदय हुये-हुये हो, तुम ही आये हुये हो।

-साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय, वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।
- विजय आर्य मो. 09540040339

विशेष सम्पादकीय

इस्लामिक संवेदनाओं का सच

पिछले कुछ महिनों से कहो या वर्षों से अखबारों के पन्ने और न्यूज चैनलों की प्रमुख खबर आतंकियों के दानवतापूर्ण कृत्यों से भरी मिलती है। मगर जब ये कुकृत्य अखबारों के पन्नों से निकलकर बाहर आते हैं तो इन मामलों पर अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय, मानवाधिकार आयोग और इस्लामिक जगत के तथाकथित धर्मगुरुओं को मौन पाते हैं। पता नहीं ये भय है या मूक संवेदनाएं जो मुँह के अन्दर लाश की तरह पड़ी हैं।

आज दुनिया के नामचीन पत्रकार खुद की सर्वश्रेष्ठता का ऐलान करने वाले न्यूज चैनल और वे अन्तर्राष्ट्रीय समाचार पत्र जिनकी एक खबर बड़ी से बड़ी सत्ता के तख्त हिला देती है ये लोग भी आज आई.एस.आई.एस. व अन्य आतंकी संगठनों के द्वारा बिछायी लाशें तो गिना देते हैं किन्तु इनके इस अमानवीय कृत्य पर मानवीय संवेदनाओं का एक आंसू नहीं टपकाते जो विश्व समुदाय की पलकों की कोरें भिगो दे। मैं कभी किसी की जाति, धर्म या लोक संस्कृति पर हमला नहीं करता किन्तु कभी-कभी लिखने की विवशता हो जाती है कि जब महाराष्ट्र के अन्दर एक मुस्लिम कर्मचारी को रोटी का निवाला खिला दिया जाता है तब भारत के नहीं अपितु पूरे विश्व के मौलाना, इमाम इस मुद्दे को लेकर अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर खड़े हो जाते हैं, झंड़े, डंड़े लेकर सड़क से संसद तक धरना, प्रदर्शन कर जाम लगाते हैं और जिस देश में रहकर पले-बढ़े उसके खिलाफ ही मुर्दाबाद के नारे लगाते हैं। लेकिन जब एक आतंकी संगठन बोको हरम या आई.एस.आई.एस. हजारों मुस्लिम लोगों की हत्या करता है तो ये खामोश हो जाते हैं तब ये इन देशों के दूतावासों पर जाकर धरना प्रदर्शन क्यों नहीं करते? क्या इस धर्म को गोली के मुकाबले रोटी से ज्यादा क्षति होती है? जब अलकायदा सीरिया में मौत का तांड़व उतारता है तो ये चुप, जब नाईजीरिया में बोको हरम 400 मासूम लड़कियों को अगवा कर कुछ को मौत के घाट उतार देता है तब भी ये चुप, जब बाघा बॉर्डर पर तहरीक ए तालिबान बिटिंग परेड में विस्फोट कर सैकड़ों निर्दोष मुस्लिमों की हत्या कर डालता है तो भी ये चुप रहते हैं, चाहे पेशावर में 150 बच्चों की हत्या हो ये तब भी चुप, जब हमास जैसा आतंकी संगठन इजराईल पर बमों से वर्षा करता है तो ये शान्त किन्तु जब इजराईल बदले की कार्यवाही करता है तो इस्लाम खतरे में जाता है। चलो हम इनके अनुसार कुछ पल मान लेते हैं कि ये हत्यारे सच्चे अर्थों में मुस्लिम नहीं होते या ये कहा जाता कि ये दीन से भटके लोग होते हैं। अगर ऐसी बात है तो इस्लाम के स्वयंभू खलीफा और इस्लामिक जगत के नेता इन हत्यारो के खिलाफ कार्यवाही तो दूर की बात इनकी निंदा तक नहीं करते। इन सारे कुकृत्यो पर मौलानाओं ने न कभी अरब देशों ने खुद इनसे सबसे ज्यादा त्रस्त पाकिस्तान ने सार्वजनिक मंचों पर, न कभी अपनी चुप्पी तोड़ी और न कभी इस कत्लेआम की निन्दा की। अब ये सारी बात मुस्लिम समाज के लिये विचारणीय हो जाती है कि सही मायने में इस्लाम को मानने वाले कौन लोग हैं? मारे जाने वाले मुस्लिम? या ये हत्यारे मुस्लिम? जो मारे गये वे भी मुसलमान थे और यदि आतंकियों द्वारा मारे जाने वाले सच्चे अर्थों में मुसलमान थे तो ये धर्म का पतन है और यदि मारने वाले मुस्लिम हैं तो ये धर्म कैसा? और तो और अब पिछले 72 घण्टों में आई. एस.आई.एस. के द्वारा फ्रांस ट्यूनिशिया कुवैत में लगभग 165 निर्दोष लोगों की हत्या कर दी गयी पर ये अब भी मौन हैं।

-सम्पादक

ग्रन्थ परिचय

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका

प्रश्न 1 : वेदों का भाष्य लिखने से पूर्व भूमिका के रूप में महर्षि ने कौन सा ग्रन्थ लिखा था?

उत्तर : ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका।

प्रश्न 2 : ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका लिखने में महर्षि का उद्देश्य क्या था?

उत्तर : महर्षि से पूर्व लिखे गये भाष्यों और टीकाओं से वेदों के विषयों में जो अनेक प्रकार की भ्रान्तियां फैल गयी थीं और उन पर जो मिथ्या दोषारोपण हो रहे थे, उनको दूर करना इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य था।

प्रश्न 3 : इन भ्रान्तियों आदि को दूर करके महर्षि ने इस ग्रन्थ 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' द्वारा क्या प्रतिपादित किया है?

उत्तर : वेद विषयक प्रचलित भ्रान्तियों को दूर करके महर्षि ने इस ग्रन्थ द्वारा लोगों के समक्ष वेदों का सत्य अर्थ प्रकट करने का प्रयास किया, जिससे वेदों के वास्तविक और सनातन अर्थ को सब भलीभांति जान सकें।

प्रश्न 4 : ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका की रचना महर्षि ने कब की?

उत्तर : महर्षि ने विक्रम संवत् 1933, भाद्रमास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, रविवार के दिन (20 अगस्त, सन् 1876) से इस ग्रन्थ की रचना प्रारम्भ की और इसकी समाप्ति संवत् 1933, मार्गशीर्ष के लगभग प्रथम सप्ताह (पौने तीन माह) में हुई।

प्रश्न 5 : इस ग्रन्थ में कितने अध्ययाय हैं और अध्याय को क्या नाम दिया गया है?

उत्तर : इस ग्रन्थ में 57 अध्याय हैं। अध्याय को 'विषय' नाम दिया गया है।

प्रश्न 6 : यह ग्रन्थ किस भाषा में लिखा गया है?

उत्तर : मूलतः संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इसके साथ-साथ हिन्दी भाषा में अनुवाद भी प्रस्तुत है।

प्रश्न 7 : इसमें प्रतिपादित कुछ विषयों का नाम बता सकते हैं?

उत्तर : ईश्वर प्रार्थना विषय, वेदोत्पत्ति विषय, वेदों का नित्यत्व विषय, विज्ञानकाण्ड, कर्मकाण्ड, सृष्टि विद्या, गणित विद्या, प्रार्थना-याचना-समर्पण, मुक्ति, नासैविमानादि विद्या, वैद्यकशास्त्र मूल विषय, पुनर्जन्म, विवाह, राज प्रजा धर्म विषय आदि।

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल कांगड़ी ...

की जांच करे और इसके लिए आवश्यक कदम उठाएगी।

दोनों सभाओं ने कहा कि विश्वविद्यालय के कर्मचारियों का हित सर्वोपरि है। इसका हमेशा ध्यान रखा गया है और रखा जाएगा। किन्तु आर्यसमाज के स्वामित्व और प्रभुत्व की शर्त में कोई समझौता किया जाना सम्भव नहीं।

यद्यपि कुलपति एवं विश्वविद्यालय प्रशासन यू.जी.सी. को यह अवैध प्रस्ताव भेज चुके हैं किन्तु कुलाधिपति सभाओं के साथ पूर्णतः सहमत हैं इस तथाकथित पारित प्रस्ताव के विरुद्ध, कुलसचिव, कुलपति एवं सचिव यू.जी.सी. को लिखा गया है और इसके सही स्वरूप को भी यू.जी.सी. के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

हम आर्यसन्देश के माध्यम से पूरे विश्व की आर्यजनता को आश्वस्त करना चाहेंगे कि विश्वविद्यालय की गरिमा औरआर्यसमाज की प्रभुता से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा।

इस सम्पूर्ण विषय की जानकारी देने के लिए स्पोन्सरिग बॉडी के सदस्य श्री विनय आर्य ने तीनों सभाओं को पत्र द्वारा प्रेषित कर चुके हैं। समय-समय पर इस विषय की जानकारी आर्यजनता की सूचनार्थ आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाती रहेगी।

महर्षि दयानन्द द्वारा आद्य राजर्षि मनु के कुछ हितकारी उपदेशों का सत्यार्थ प्रकाश में प्रस्तुतिकरण

महर्षि दयानन्द ने अपनी अनुसंधान व सत्य के ग्रहण की मनोवृत्ति से मनुजी के प्रत्येक शब्द व श्लोक की परीक्षा की और केवल सत्य पाठों व श्लोकों को ही स्वीकार किया। आज के इस लेख में महर्षि दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में मनुस्मृति के श्लोकों का जो हिन्दी अनुवाद व पाठ प्रस्तुत किया गया है, ऐसे कुछ स्थलों को पाठकों के स्वाध्याय लाभ हेतु प्रस्तुत कर रहा हूं। **-संपादक**

वेद सर्व प्राचीन ग्रन्थ है। वेदों के बाद अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थों में मनुस्मृति का नाम आता है। सौभाग्य से वैदिक साहित्य के शत्रु जिन्होंने हमारे तक्षशिला एवं नालन्दा व अन्य पुस्तकालयों को अग्नि को समर्पित कर नष्ट किया परंतु वे इन्हें नष्ट नहीं कर पाये। ईश्वर की यह महती कृपा आर्य जाति के प्रति दिखाई देती है। इसके लिये हमारे यह पूर्वज महापुरुष हमारी श्रद्धा व आभार के पात्र हैं जिन्होंने दुर्दिनों में इनकी रक्षा कर हम तक पहुंचाया है। मध्यकाल में हमारे पौराणिक विचार के पूर्वजों ने मनुस्मृति से अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये इसमें अनेक प्रक्षेप किये जिससे इसका स्वरूप वह नहीं रहा जो महर्षि मनु, उनके बाद महाभारत काल पर्यन्त व बाद के कुछ वर्षो तक था। महाभारत काल के बाद यह प्रक्षेप व परिवर्तन किये गये। ईश्वर की कृपा ही कह सकते हैं कि प्रक्षेपकर्त्ताओं ने मनुस्मृति से श्लोकों को निकाला नहीं परन्तु अपनी-अपनी मान्यताओं के श्लोक बनाकर बीच-बीच में उसमें डाल दिये जिससे लोग उन प्रक्षिप्त श्लोकों पर भी विश्वास करने लगे। महाभारत काल के बाद भारत में मुद्रण व्यवस्था विद्यमान न होने के कारण सभी ग्रन्थ भोजपत्रों आदि पर हाथ से लिखे जाते थे। बहुत सीमित प्रतियां किसी ग्रन्थ की होती थीं। अत: एक प्रति में प्रक्षेप हो जाने पर उसकी जो प्रतियां अर्थात् प्रतिकृतियां किसी विद्वान व उसके शिष्यों द्वारा होती थीं उसमें वह प्रक्षेप हुआ करते थे। लिपिकर्त्ता भी अपनी मनमानी करते रहे होंगे, इसका अनुमान इसी बात से लगता है कि महर्षि दयानन्द जी ने अपना प्रथम मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पं. चन्द्रशेखर को बोलकर लिखाया था। इस लेखक में महर्षि दयानन्द जी की जो बातें उसके विचारों व मान्यताओं के विपरीत थी उन्हें चुपचाप बदल दिया जिसका ज्ञान महर्षि दयानन्द को तब हुआ जब वह ग्रन्थ छप कर पाठकों के पास पहुंच गया। प्रेसकर्मी भी सत्यार्थ प्रकाश के बदलने के दोषी रहे हैं। वह भी कम्पोज करते समय जहां उन्होंने जो ठीक लगा, स्वेच्छाचारितापूर्वक गुपचुप परिवर्तन कर डाला। बाद में महर्षि दयानन्द को इसके लिये विज्ञापन प्रकाशित कर प्रचारित करने पड़े और सत्यार्थ प्रकाश का नया पुनरीक्षित व संशोधित संस्करण प्रकाशित करना पड़ा। यदि किसी कारण ग्रन्थ लिखने व प्रकाशित होने के साथ उनकी मृत्यु हो जाती तो अनर्थ हो जाता। लोग प्रक्षेपों को ही मूल पाठ समझने लगते। ऐसा ही मनु जी के ग्रन्थ मनुस्मृति में भी मध्यकाल में स्वार्थी पण्डित विद्वानों ने किया। महर्षि दयानन्द ने अपनी अनुसंधान व सत्य के ग्रहण की मनोवृत्ति से मनुजी के प्रत्येक शब्द व श्लोक की परीक्षा की और केवल सत्य पाठों व श्लोकों को ही स्वीकार किया। आज के इस लेख में महर्षि दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में मनुस्मृति के श्लोकों का जो हिन्दी अनुवाद व पाठ प्रस्तुत किया गया है, ऐसे कुछ स्थलों को पाठकों के स्वाध्याय लाभ हेतु प्रस्तुत कर रहा हूं।

महर्षि लिखते हैं कि धर्मयुक्त कामों का आचरण, सुशीलता, सत्पुरुषों का संग और सद्विद्या के ग्रहण में रुचि आदि आचार और इनसे विपरीत अनाचार कहलाता है, उसका उल्लेख वह मनुस्मृति के श्लोकों का अनुवाद कर प्रस्तुत कर रहे हैं। पाठक महर्षि दयानन्द के शब्दों पर कृपया ध्यान दें। आज से 141 वर्ष पूर्व अज्ञान में डूबे भारत के लोगों को कितनी महत्त्वपूर्ण बातें वह बता रहे हैं। यदि यह ज्ञान महाभारत काल के बाद रहा होता तो संसार में केवल एक वैदिक मत ही विद्यमान रहता, हम गुलाम न होते, कहीं मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, बाल विवाह, अपृश्यता व सामाजिक विषमता, मृतक श्राद्ध आदि जैसी कुरीतियां समाज में न होती। आगे महर्षि दयानन्द मनु के वचनों को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं जो संसार में पहली बार हिन्दी प्रेमियों को उनकी ओर से भेंट प्रस्तुत की गयी है। वह लिखते हैं कि मनुष्यों को सदा इस बात पर घ्यान रखना चाहिये कि जिसका सेवन राग-द्वेष रहित विद्वान लोग नित्य करें जिसको हृदय अर्थात् आत्मा से सत्य कर्त्तव्य जाने, वहीं धर्म माननीय और करणीय है। दूसरे उपदेश में वह कहते हैं कि इस संसार में अत्यन्त कामात्मता और निष्कामता श्रेष्ठ नहीं है क्योंकि वेदार्थज्ञान और वेदोक्त कर्म, ये सब कामना ही से सिद्ध होते हैं। जो कोई कहे कि मैं निरिच्छ (इच्छा रहित) और निष्काम हूं व हो जाऊं तो वह कभी नहीं हो सकता क्योंकि सब काम अर्थात् सच सत्याभाषणादि व्रत, यम-नियम रूपी धर्म आदि संकल्प (व इच्छा) ही से चलते हैं। जो इच्छा न हो तो आंख का खोलना और बन्द करना भी नहीं हो सकता। इसलिये सम्पूर्ण वेद, मनुस्मृति तथा ऋषिप्रणीत शास्त्र, सत्पुरुषों का आचार और जिस-जिस कर्म में अपनी आत्मा प्रसन्न रहे अर्थात् भय, शंका, लज्जा जिस में न हो उन कर्मा का सेवन करना उचित है। देखो! जब कोई मिथ्या भाषण, चोरी आदि की इच्छा करता है तभी उसकी आत्मा में भय, शंका, लज्जा अवश्य उत्पन्न होती है। इसे परमात्मा उत्पन्न कराता है। इसलिए वह कर्म करने योग्य न नहीं है। मनुष्य सम्पूर्ण शास्त्र, वेद, सत्पुरुषों का आचार अर्थात् आचरण व व्यवहार, अपने आत्मा के अविरुद्ध अच्छे प्रकार के विचार कर ज्ञान नेत्र करके श्रुति-प्रमाण से स्वावत्मानुकूल धर्म में प्रवेश करें क्योंकि जो मनुष्य वेदोक्त धर्म और जो वेद से अविरुद्ध स्मृत्युक्त धर्म का अनुष्ठान करता है वह इस लोक में कीर्ति और मर के सर्वोत्तम सुख को प्राप्त होता है। यहां मरने के पश्चात् सर्वोत्तम सुख को प्राप्त होने का जो उल्लेख है वह यह है कि वह पुनर्जन्म लेकर इस जन्म से अधिक श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त करता है या उसका मोक्ष हो जाता है। यह भी ज्ञातव्य है कि श्रुति वेद को कहते हैं और स्मृति धर्म शास्त्र अर्थात् मनुस्मृति को कहते हैं। इन दोनों ग्रन्थों से सब कर्त्तव्य और अकर्त्तव्यों का निश्चय करना चाहिये। मनु जी कहते हैं कि जो कोई मनुष्य वेद और वेदानुकूल आप्त ग्रन्थों का अपमान करे उसको श्रेष्ठ लोग जातिबाह्य कर दें क्योंकि जो वेद की निन्दा करता है वही नास्तिक कहलाता है। यह भी ज्ञातव्य है कि मनुस्मृति के विधानों का प्रयोग महाभारतकाल व उससे कुछ शताब्दी वर्ष पूर्व तक संसार में होता चला आया है, इसका अनुमान किया जाता है क्योंकि तब मनुस्मृति के तुल्य व इतर अन्य कोई विधान नहीं था। महर्षि दयानन्द मनुस्मृति की शिक्षा के आधार पर सत्यार्थ प्रकाश में एक श्लोक को प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि इसलिये वेद, स्मृति, सत्पुरुषों का आचार और अपनी आत्मा के ज्ञान से अविरुद्ध प्रियाचरण, ये चार धर्म के लक्षण हैं अर्थात् इन्हीं से धर्म लक्षित होता है। यहां यह भी बता दें कि मनुस्मृति के यह विधान वेदानुकूल होने के आज भी प्रमाण हैं और यह आज भी प्रासंगिक एवं व्यवहारिक हैं। धर्म विषयक यह जानना सभी के लिये महत्वपूर्ण है कि जो द्रव्यों के लोभ और काम अर्थात् विषय सेवा में फंसा हुआ नहीं होता उसी को धर्म का ज्ञान होता है। जो धर्म को जानने की इच्छा करे उनके लिये वेद ही परम प्रमाण है। इसका अर्थ है धर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिये वेद से बढ़कर संसार में कोई ग्रन्थ या विचारधारा नहीं है। महर्षि दयानन्द बताते हैं कि सब मनुष्यों को उचित है कि वेदोक्त पुण्य रूप कर्मो से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपने सन्तानों का निषेकादि (गर्भाधान आदि) संस्कार करें जो इस जन्म व परजन्म में पवित्र करने वाले हैं।

महर्षि दयानन्द मनुस्मृति के आधार पर कहते हैं कि मनुष्य का यही मुख्य आचार है कि जो इन्द्रियां चित्त का हरण करने वाले विषयों में प्रवृत्त कराती हैं, उनको रोकने का प्रयत्न करें जैसे घोड़ों को सारथी रोक कर शुद्ध मार्ग में चलाता है। इस प्रकार अपनी सभी इन्द्रियों को अपने वश में करके अधर्म मार्ग से हटा कर धर्म मार्ग में सदा चलाया करें क्योंकि इन्द्रियों को विषयासक्ति और अधर्म में चलाने से मनुष्य निश्चित दोष को प्राप्त होता है और जब इनको जीत कर धर्म में चलाता है तभी अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त होता है। यह निश्चय है कि जैसे अग्नि में ईधन और घी डालने से वह बढ़ती है वैसे ही कामों के उपभोग से काम शान्त कभी नहीं होता किन्तु बढ़ता ही जाता है। इसलिये मनुष्य को विषयासक्त कभी नहीं होना चाहिये। जो अजितेन्द्रिय पुरुष हैं उसको विप्रदुष्ट कहते हैं। इसके करने से न वेद ज्ञान, न त्याग, न यज्ञ, न नियम और न धर्माचरण सिद्धि को प्राप्त होते हैं, किन्तु ये सब जितेन्द्रिय धार्मिक जनों को सिद्ध होते हैं। राजर्षि मनु व महर्षि दयानन्द कहते हैं कि इसलिये पांच कर्म, पांच ज्ञानेन्द्रिय और ग्यारहवें मन को अपने वश में करके युक्ताहार विहार योग से शरीर की रक्षा करते हुये सब अर्थो को सिद्ध करें। जितेन्द्रिय पुरुष व मनुष्य वह होता है जो स्तुति सुन के हर्ष और निन्दा सुन के शोक, अच्छा स्पर्श करके सुख और दुष्ट स्पर्श से दु:ख, सुन्दर रूप देख के प्रसन्न और दुष्ट रूप देख के अप्रसन्न, उत्तम भोजन करके आनन्दित और निकृष्ट भोजन करके दु:खित, सुगन्ध में रुचि और दुर्गन्ध में अरुचि नहीं करता है। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में मनुष्य में इन गुणों व लक्षणों को सत्य सिद्ध कर दिखाया। उनके शिष्यों ने भी उनके इन गुणों का ग्रहण व धारण कर समाज में प्रेरणा दायक उदाहरण प्रस्तुत किये। आज समाज व देश सहित सभी मत-धर्मो में ऐसे लोगों का मिलना अति दुष्कर है। सभी लोग बातें तो बड़ी करते हैं परन्तु उनका व्यक्तिगत जीवन व चरित्र इसके सर्वथा विपरीत ही देखने को मिलता है।

अन्त में महर्षि दयानन्द को प्रिय महर्षि मनु के कुछ और वचनों को प्रस्तुत कर इस लेख को विराम देते हैं। वह लिखते हैं कि एक धन, दूसरे बन्धु कुटुम्ब, कुल, तीसरी अवस्था, चौथा उत्तम कर्म और पांचवीं श्रेष्ठ विद्या, ये पांच मान्य के स्थान है। परन्तु धन से उत्तम बन्धु, बन्धु से अधिक अवस्था, अवस्था से श्रेष्ठ कर्म और कर्म से पवित्र विद्या वाले उत्तरोत्तर अधिक माननीय हैं क्योंकि चाहे सौ वर्ष का भी हो परन्तु जो विद्या विज्ञानरहित है वह बालक और जो विद्या विज्ञान का दाता है उस बालक को भी वृद्ध मानना चाहिये। क्योंकि सब शास्त्र आप्त विद्वान अज्ञानी को बालक और ज्ञानी को पिता कहते हैं। वह कहते हैं कि अधिक वर्षो के बीतने, श्वेत बाल के होने, अधिक धन से और बड़े कुटुम्ब के होने से वृद्ध नहीं होता। किन्तु ऋषि महात्माओं का यही निश्चय है कि जो हमारे बीच में विद्या विज्ञान

...शेष पेज 8 पर

जन्मोत्सव पर विशेष

आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालंकार

आर्य जगत के प्रणेता आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालंकार जी का जन्म 7 जुलाई 1914 को फरीदपुर, बरेली, उत्तर प्रदेश के एक प्रतिष्ठित आर्य परिवार में हुआ। आचार्य जी अपनी विद्वत्ता से महान यशस्वी बने। डॉ. रामनाथ सौम्यमूर्त्ति, सामवेद, विद्यामार्त्तण्ड आदि अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत व पैतृक आर्य थे। आप प्रारम्भ से ही मेधावी एवं प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी थे। अपनी असाधारण योग्यता से आपने गुरुजनों का मन मोह रखा था; न केवल अध्ययन में वरन् लेखन और भाषणादि में भी आपकी विशेष रुचि थी। आचार्य जी सरल व्यक्तित्व के धनी थे। आपको प्रारम्भ से ही वेदों के प्रति अगाध श्रद्धा तथा वैदिक विषयों पर शोध करने में रुचि थी। अत: आपने पी. एच-डी. की उपाधि के लिये शोध का विषय ''वेदों की वर्णन शैलियां'' चुना था और आगरा विश्व विद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी।

1966 में आपने डी.ए.वी. कॉलेज देहरादून में संस्कृत-विभागाध्यक्ष डॉ. धर्मेन्द्र नाथ जी के निर्देशन में शोध पूर्ण प्रबन्ध प्रस्तुत करके पी.एच-डी की उपाधि प्राप्त की थी। डॉ. मंगलदेव शास्त्री, पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति आदि विद्वानों ने आपके शोध-प्रबन्ध को आद्योपान्त देखा और आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। आपका विशुद्ध सात्विक जीवन सरल व्यवहार, मितभाषिता, माधुर्य, विशुद्ध ब्राह्मणवृत्ति से वेदों का गम्भीर अनुशीलन एवं विशिष्ट अध्ययन शैली अनुकरणीय है। आपके नाम के आगे आचार्य पद वस्तुत: सार्थक है। विद्वज्जगत् आपसे गौरवान्वित हो गया। आपके द्वारा सरल, सुबोध प्रवाहमयी भाषा में लिखी 'वेद मंजरी' भक्ति की धारा आज भी बहा रही है। 8 अप्रैल 2013 वेद मंदिर गीता आश्रम ज्वालापुर में ये महान हस्ती हम सबसे बिदा होकर ब्रह्मलीन हो गयी।

संस्कृत संगीत समारोह सोल्लास सम्पन्न

आध्यात्म पथ (पं.) मासिक पत्रिका एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में आर्य समाज बी-2 जनकपुरी में विश्वशांति महायज्ञ, संस्कृत संगीत भजन संध्या एवं सांस्कृतिक समारोह आयोजित किया गया। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने अपने आशीर्वचन में कहा कि 'यज्ञ करने वाले का घर अत्यन्त मनोहर, धनधान्य से परिपूर्ण, हितकारी एवं रमणीय होता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अरुण सहारन ने की। विशिष्ट अतिथि सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, पद्तश्री डॉ. रमाकान्त शुक्ल एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार थे। समारोह में साध्वी उत्तमा यदि, सर्वश्री यशपाल आर्य, वेद प्रकाश, कृष्ण बवेजा, पी, एन, खन्ना, ईश कुमार गक्खड़, हीरालाल चावला, राजीव आर्य,वीरेन्द्रसरदाना, प्रिं. अरुण आर्य, सुरिन्द्र चौधरी, इत्यादि की उपस्थिति गरिमापूर्ण रही।

-सूर्य कान्त मिश्र, सह सम्पादक

आर्य समाज विज्ञान नगर में वैदिक सत्संग सम्पन्न

कोटा, आर्य समाज विज्ञान नगर में वैदिक सत्संग कार्यक्रम में अमरोहा से पधारे डॉ. अशोक कुमार आर्य ने कहा 'आर्य समाज एक ऐसा वैश्विक संगठन है, जिसका उद्देश्य संसार का उपकार करना है। आर्य समाज एक ऐसे जन आंदोलन का नाम है जिसने नारी उत्थान, दलितोद्धार, सामाजिक समरसता, छुआछूत का निषेध, स्वराज, स्वदेशी व भारतीय सभ्यता और संस्कृति की उत्कृष्टता के प्रमाणीकरण जैसे असंख्य प्रखर आंदोलनों का सूत्रपात किया।' इस अवसर पर सम्पन्न अग्निहोत्र में राष्ट्रकल्याण व विश्वशांति की कामना की गयी। जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा की पौत्री कीर्ति व मानसी ने वेदमंत्रों का सुमधुर पाठ किया।

बोध कथाएं

उचित क्रोध

महाराजा रणजीत सिंह के जरनैल सरदार हरिसिंह नलवा कश्मीर में थे, जब उन्हें महाराजा का संदेश मिला कि पठानों की फौजें अटक के उस पार आ गयी हैं, वहां पहुंचो, उन्हें हटाओ। सरदार हरिसिंह नलवा तेजी के साथ कश्मीर से अटक की ओर बढ़े। वह गढ़ी हबीबुल्ला के मार्ग में एबटाबाद की ओर बढ़ रहे थे कि दोमेल के निकट रहने वाले पठानों ने मार्ग देने से मना कर दिया। नलवा ने कहा-'तुम क्या चाहते हो? तुम्हारे साथ मुझे लड़ना नहीं है।'

पठानों ने कहा-'लड़ना हम भी नहीं चाहते, परन्तु हमारी कुछ शर्तें हैं। उन्हें माने बिना आप आगे नहीं जा सकते हैं।'

सरदार हरिसिंह नलवा ने सारी बात को मजाक समझा, पूछा 'क्या शर्तें हैं?'

नलवा ने कहा-'कोई बात नहीं, आप शाम को बताइये। हम कल चले जायेंगे।'

परन्तु जिस बात को नलवा ने मजाक समझा था, वह उसके लिये समस्या बन गयी। शाम हो गयी, कोई शर्त बताई नहीं गयी। दूसरे दिन भी शर्त तय नहीं हुई। तीसरे दिन भी नहीं हुई। पठान मार्ग रोके खड़े थे। नलवा जी उनसे बिना लड़े आगे बढ़ना चाहते थे। समय व्यतीत हुआ जाता था। शर्तों का निर्णय होने में नहीं आता था। हरिसिंह चकित थे, करें तो क्या करें?

एक रात वह सो रहे थे कि ठप-ठप की आवाज सुनकर जाग उठे। पास खड़े पहरेदार से उन्होंने पूछा- 'यह आवाज कैसी है?'

पहरेदार ने कहा -'साहब, वर्षा हो रही है।'

हरिसिंह बोले -'वर्षा की आवाज मैं भी सुनता हूं परन्तु यह ठप-ठप क्या हो रहा है?'

पहरेदार ने कहा -'सरकार, सब लोग अपनी-अपनी छतों पर चढ़कर मिट्टी को कूट रहे हैं। इस प्रदेश की मिट्टी ही ऐसी है कि कूटे-पीटे बिना ठीक नहीं रहती।'

हरिसिंह एकदम चौंक उठे, बोले -'क्या कहा तुमने? एक बार फिर कहो तो?'

पहरेदार ने कहा -'सरकार इस इलाके की मिट्टी ही ऐसी है। कूटे-पीटे बिना दुरुस्त नहीं होती।

नलवा जी हंसकर बोले -'यह मेरी ही गलती थी कि इस मिट्टी की विशेषता को मैं समझ नहीं पाया। सेना को आज्ञा दो कि इसी समय पठानों पर आक्रमण करदे। जहां जो मिले, उसको वहीं पीट डालो।'

थोड़ी देर में हर ओर मार-पीट होने लगी। प्रात: काल होने से बहुत पहले कितने ही पठान गर्दनों में पल्लू डाले उनके पास आये। हरिसिंह गरजकर बोले - 'क्या चाहते हो?'

पठानों ने सिर झुकाकर कहा -'कुछ नहीं श्रीमन्!'

हरिसिंह बोले -'क्या शर्तें हैं तुम्हारी?'

पठानों ने सिर झुकाकर कहा -'सरकार, कोई शर्त नहीं। मार्ग साफ है। आप जाइये, कोई आपको रोकेगा नहीं।'

यह है ठीक और उचित क्रोध जो घर से बाहर और देश की रक्षा के लिये, उसकी स्वतन्त्रता के लिये और धर्म की रक्षा के लिये किया जाये। ऐसा क्रोध आत्मदर्शन के मार्ग में रुकावट नहीं। आत्मदर्शन के मार्ग में रुकावट है वह क्रोध, जो घर में किया जाये, स्वार्थ के लिये किया जाये। ऐसा क्रोध घर को, परिवार को , जाति को, देश को, सबको नष्ट कर देता है। ऐसा क्रोध बुद्धि को नष्ट कर देता है। बुद्धि के नाश होने से सर्वनाश होता है।

आर्य समाज पंखा रोड 'सी' ब्लॉक के तत्त्वावधान में सरल आध्यात्मिक एवं शंका समाधान शिविर

आर्य समाज पंखा रोड, सी ब्लॉक दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 5 जुलाई 2015 को आध्यात्मिक एवं शंका समाधान शिविर का आयोजन हो रहा है। कार्यक्रम में स्वामी सत्यपति परिव्राजक जी के शिष्य एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान् एवं निदेशक, दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, गुजरात के स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक का उद्बोधन होगा।

समय प्रात: 6.30 से 10 बजे के मध्य

विनीत : श्री शिव कुमार मदान, प्रधान, (09310474979)
श्री अजय तनेजा, मंत्री (09811129892)
महिला समाज
श्रीमती शकुन्तला गुलाटी, प्रधान (09650772569)
श्रीमती पुष्पा नासा, मंत्री (09911144241)

आर्य समाज पंखा रोड सी ब्लॉक का उपक्रम

श्रीमती बाला मल्होत्रा चैरिटेबल फिजियोथैरेपी सेण्टर

सी-3 ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली-110058, दूरभाष 011-25544486

गुम चोट, मोच, सूजन, गठिया (आर्थराइटिस), लकवा, गर्दन, कमर कन्धे, घुटने, एड़ी, कोहनी इत्यादि का दर्द एवं अन्य बीमारियों का उपचार अत्याधुनिक मशीनों एवं थिरैप्यूटिक एक्सरसाइज के द्वारा एक्सपर्ट फिजियोथैरिपिस्ट की देख-रेख में किया जाता है।

समय प्रात: 9 से 11.30 व सायं 5 से 7.30 बजे

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जन्मोत्सव पर विशेष

सत्य को सत्य के रूप में और असत्य को असत्य के रूप में प्रतिपादित करना ही सत्य का यथार्थ रूप है

महान शिक्षाविद्, चिन्तक और भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई 1901 को कलकत्ता के प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। आपके पिता सर आशुतोष मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे एवं शिक्षाविद् के रूप में विख्यात् थे। डॉ. मुखर्जी ने 1917 में मैट्रिक पास किया तथा 1921 में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की थी। 1923 में लॉ की उपाधि अर्जित करने के पश्चात् आप विदेश चले गये और 1926 में इंग्लैण्ड से बैरिस्टर बनकर स्वदेश लौटे।

अपने पिता का अनुसरण करते हुए श्यामा प्रसाद ने अल्पायु में ही विद्याध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएं अर्जित कर ली थीं। 33 वर्ष की अल्प आयु में वे कलकत्ता विश्व विद्यालय के कुलपति बने। इस पद पर नियुक्ति पाने वालों में वे सबसे कम आयु के कुलपति थे। एक विचारक तथा प्रखर शिक्षाविद् के रूप में उनकी उपलब्धि तथा ख्याति निरन्तर आगे बढ़ती गयी।

डॉ. मुखर्जी ने स्वेच्छा से देश प्रेम और राष्ट्र प्रेम की अलख जगाने के उद्देश्य से राजनीति में प्रवेश किया। डॉ. मुखर्जी सच्चे अर्थों में मानवता के उपासक और सिद्धान्तवादी थे। उन्होंने बहुत से गैर कांग्रेसी हिन्दुओं की मदद से कृषक प्रजा पार्टी से मिलकर प्रगतिशील गठबन्धन का निर्माण किया। इसी समय वे वीर सावरकर के राष्ट्रवाद के प्रति आकर्षित हुये और हिन्दू महासभा में सम्मिलित हो गये।

डॉ मुखर्जी गान्धी जी और सरदार पटेल के अनुरोध पर भारत के पहले मंत्रिमण्डल में शामिल हुये। उन्हें उद्योग जैसे महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गयी। संविधान सभा और प्रान्तीय संसद के सदस्य और केन्द्रीय मंत्री के नाते उन्होंने शीघ्र ही अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था, किन्तु उनके राष्ट्रवादी चिन्तन के चलते अन्य नेताओं से मतभेद बराबर बने रहे। फलत: राष्ट्रीय हितों की प्रतिबद्धता को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता मानने के कारण उन्होंने मंत्रिमण्डल से त्यागपत्र दे दिया और एक नई पार्टी का गठन किया जिसका नाम था भारतीय जनसंघ जो उस समय विरोधी पक्ष के रूप में सबसे बड़ा दल था। अक्टूबर 1951 में भारतीय जनसंघ का उद्भव हुआ।

डॉ. मुखर्जी जम्मू कश्मीर को भारत का पूर्ण और अभिन्न अंग बनाना चाहते थे। संसद में अपने भाषण में डॉ. मुखर्जी ने धारा-370 को समाप्त करने की भी जोरदार वकालत की थी। अगस्त 1952 में जम्मू की विशाल रैली में उन्होंने अपना संकल्प व्यक्त किया कि या तो मैं आपको भारतीय संविधान प्राप्त कराऊंगा या फिर इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपना जीवन बलिदान कर दूंगा। उन्होंने नेहरू सरकार को चुनौती दी तथा अपने दृढ़ निश्चय पर अटल रहे। अपने संकल्प को पूरा करने के लिये वे 1953 में बिना परमिट लिये जम्मू कश्मीर की यात्रा पर निकल पड़े। वहां पहुंचते ही उन्हें गिरफ्तार कर नजरबन्द कर दिया गया और 23 जून 1953 को रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गयी।

डॉ. मुखर्जी आर्य समाजी नहीं थे लेकिन वे आर्य समाज से काफी प्रभावित थे और वे हृदय से आर्य समाज की मुख्य धारा से जुड़े हुए थे। यह बात सन् 1944 में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पांचवे महासम्मेलन, दिल्ली में दिये गए उनके जोशीले भाषण प्रतीत होती है। प्रस्तुत हैं भाषण के कुछ अंश-

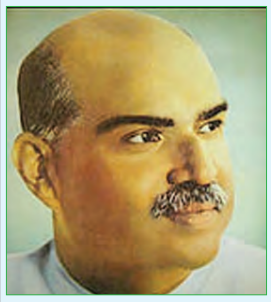

डॉ. मुखर्जी ने अपने भाषण में कहा .....

.....अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से, अन्य देशों पर राज्य करने की तो कथा ही क्या कहना, किन्तु आर्यवर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों से पादाक्रान्त हो रहा है।.....

.....फ्रांस के महान् तत्त्वदर्शी रोमांरोला का यह कथन सर्वथा सत्य है कि महर्षि दयानन्द ने भारत के शक्ति शून्य शरीर में अपनी दुर्घर्ष शक्ति, अविचलता तथा सिंह पराक्रम फूंक दिये हैं। भाग्य के आगे सिर झुका देने वाली तथा निष्क्रिय जनता को उसने सावधान कर दिया कि आत्मा स्वाधीन है और कर्म ही भाग्य का निर्माता है।...

....सत्य को सत्य के रूप में और असत्य को असत्य के रूप में प्रतिपादित करना ही सत्य का यथार्थ रूप है।.....

.....आर्य समाज के अनुयायियों के दृढ़ संगठन को जानते हुए ही मैं यह कहने का साहस करता हूं कि यदि हमारे धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप करने का कोई भी दुष्प्रयत्न किया गया तो उसके परिणाम की चिन्ता किये बिना साहस और संगठित प्रतिरोध के बल पर छिन्न-भिन्न कर दिया जायेगा।....

देवियो और सज्जनो,

आप लोगों ने मुझे अखिल भारतवर्षीय आर्य सम्मेलन के पांचवें अधिवेशन का सभापति निर्वाचित करके जो सम्मान दिया है, उसे मैं हृदय से अनुभव करता हूं। आपका सम्मेलन कार्यक्रम तथा कार्यों पर विचार करने के लिये नियमित रूप से होने वाली सभाओं की भांति प्रतिवर्ष नहीं होता, प्रत्युत विशेष परिस्थितियों का सामना करने के लिये तथा भातरवर्ष के हित और विशेष रूप से हिन्दू जाति के अधिकारों से सम्बन्ध रखने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के विषय में आर्यजनों का मत निर्धारण करने के लिये, जगत् के आर्य मात्र की प्रतिनिधि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बड़ी सेवा है कि उसने जनता में वैयक्तिक तथा राष्ट्रीय आत्म सम्मान की गम्भीर भावना, मन की चेतनता और देश की संस्कृति तथा सभ्यता के लिये प्रेम उत्पन्न करके हीनता की उस विषमय भावना का विनाश कर दिया जोकि मनुष्य को कायर बना देती है। यही कारण है कि हम देखते हैं कि आर्य समाज जनता को कर्म में प्रवृत्त करने के लिये निरे अपने प्राचीन गौरव के उपाख्यानों और वर्तमान कर्तव्य के सम्बन्ध में कोरे व्याख्यानों से ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता, वह मानव-जीवन के तथा आध्यात्मिक बल की अभिवृद्धि, उनकी सामाजिक स्थिति की उन्नति, उनमें सत्य और धर्म के प्रति अमर श्रद्धा की जागृति और उनको अपने अधिकारों की रक्षार्थ मर-मिटने के लिये प्रेरित करना आर्य समाज के कार्यक्रम का मुख्य भाग रहा है और धर्म के क्षेत्र में आर्य समाज ने अपना दरवाजा सदा खुला रखा है और अपने धार्मिक दृष्टिकोण की उदारता की घोषणा करके उसने न केवल दूसरों के आक्रमणों से हिन्दू धर्म की रक्षा की है,अपितु जो लोग मतान्तरों अथवा धर्मान्तरों के फेर में पड़कर भटक गये थे उन्हें पुन: हिन्दू धर्म में ले आने का साहस भी प्रकट किया है।

आर्य समाज ने संगठित रूप से राजनीति में व्यावहारिक भाग कभी नहीं लिया, परन्तु उसके अनेक सदस्य देश की स्वतन्त्रता के संघर्ष में अग्रणीय सैनिक रहे हैं। उसके माननीय संस्थापक ने अपने स्मरणीय ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में वैयक्तिक तथा राष्ट्रीय जीवन के सभी पहलुओं पर विशेषत: भारतीय दृष्टि से विचार करते हुये, अपने देश की राजनीतिक दशा पर भी स्पष्टतम भाषा में अपना अभिमत प्रकट किया है। उन्होंने लिखा है:-

''अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से, अन्य देशों पर राज्य करने की तो कथा ही क्या कहना, किन्तु आर्यवर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों से पादाक्रान्त हो रहा है।.....दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दु:ख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह-रहित अपने और पराये का पक्षपात् शून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुख दायक नहीं है।''

क्या हमारी राजनीति दासता का इससे अधिक विशद तथा साहसपूर्ण विश्लेषण सम्भव है? फ्रांस के महान् तत्त्वदर्शी रोमांरोला का यह कथन सर्वथा सत्य है कि महर्षि दयानन्द ने भारत के शक्ति शून्य शरीर में अपनी दुर्घर्ष शक्ति, अविचलता तथा सिंह पराक्रम फूंक दिये हैं। भाग्य के आगे सिर झुका देने वाली तथा निष्क्रिय जनता को उसने सावधान कर दिया कि आत्मा स्वाधीन है और कर्म ही भाग्य का निर्माता है। उत्कृष्ट आध्यात्मिक अनुमति के प्रभाव में श्री अरविन्द ने ऋषि दयानन्द के विषय में निम्न उद्गार प्रकट किये हैं :- 'संक्षेप में - वह ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाला योद्धा, मनुष्य तथा संस्थाओं का शिल्पी और आत्मा के मार्ग से प्रकृति द्वारा खड़ी की गयी विघ्न-बाधाओं को कुचल देने वाला एक सधा हुआ विजेता था।'

ऋषि ने अपने देश के निवासियों तथा समस्त विश्व को सत्यार्थ प्रकाश के रूप में जो अविनश्वर वसीयत दी है, वह उनकी प्रकाण्ड प्रतिभा का प्रतीक है। इस ग्रन्थ में वह हमारे सम्मुख एक उत्पादक कलाकार, समीक्षक, संहार तथा निर्माता के रूप में प्रकट हुये हैं। वेदों में प्रतिपादित स्वाधीनता, समानता तथा सत्य के शाश्वत सिद्धान्तों में उनकी अविचल निष्ठा थी। वे अज्ञान, हठधर्मिता और मिथ्या विश्वासों के दुर्ग पर अविश्रान्त प्रहार करते रहे। अपने प्रगतिशील विचारों का साथ देने में असमर्थ, अपने देशवासियों के प्रभावशाली वर्ग के विरोध का उन्हें सामना करना पड़ता था। परन्तु वे अपने विश्वासानुमादित सत्य मार्ग पर सदा अविचलित रहे और उन्होंने लक्ष्य के प्रति अपने विमल निष्ठा और विश्वास के प्रति अपने अप्रतिहत साहस के साथ घोषणा की :-

'सत्य को सत्य के रूप में और असत्य को असत्य के रूप में प्रतिपादित करना ही सत्य का यथार्थ रूप है। असत्य को सत्य के तथा सत्य को असत्य के रूप में प्रकट करना सत्य का प्रकाशन नहीं है।'

ऋषि ने अपने महान् दर्शन 'सत्यार्थ प्रकाश' में एक ऐसे पुनर्गठित समाज का रूप

...शेष पेज 7 पर

मानव जीवन में संस्कार और उनका महत्व

वास्तव में कर्म की आत्मा पर पड़ी निशानी (रेखा) का नाम ही संस्कार है। संस्कार ही व्यक्ति के स्वभाव का निर्धारण करते हैं और ये स्थायी भी होते हैं। व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व संस्कारों द्वारा ही निर्मित होता है।नागरिकों के सामूहिक संस्कारों के परिणाम ही राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करते हैं। वास्तव में संस्कार-प्रणाली मानव निर्माण की आधार-शिला है। मनु स्मृति में कहा गया है । जन्म से लेकर जीवन के अंत तक कब और कौन से संस्कारों का विधान है तथा उनका क्या महत्व है आइये उसे जानते हैं। **-सम्पादक**

मानव के स्वस्थ एवं सर्वांगीण विकास का आधार सार्थक शिक्षा और संस्कार हैं। शिक्षा प्रदान का दायित्व परिवार, समाज एवं सरकार का है किन्तु संस्कार प्रदान करने का दायित्व परिवार विशेषकर माता-पिता एवं धार्मिक व सांस्कृतिक संगठनों का है मनुष्य के स्वस्थ्य व संतुलित विकास के निर्धारण में वंशानुगक्रम तथा वातावरण मुख्य कारक हैं। आधुनिक युग में वातावरण का महत्व बहुत बढ़ गया है।

प्रख्यात मनोविज्ञानी डॉ. मेग्डूगल का कहना है कि बच्चे के विकास में माता-पिता के वंशानुक्रम से प्राप्त गुणों के साथ माता-पिता द्वारा अपने जीवन में अर्जित गुण भी बच्चे में प्रेषित हो जाते हैं। माता-पिता के अर्जित गुण उसको प्रमुख रूप से संस्कारों के द्वारा प्राप्त होते हैं। धर्म शास्त्रियों का दृढ विश्वास है कि पूर्व जन्म के संस्कार भी मानव जीवन के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

महर्षि चरक के मतानुसार व्यक्ति में पूर्व विद्यमान विकारों को हटाकर सद्गुणों को धारण करना ही संस्कार है। वास्तव में कर्म की आत्मा पर पड़ी निशानी (रेखा) का नाम ही संस्कार है। संस्कार ही व्यक्ति के स्वभाव का निर्धारण करते हैं और ये स्थायी भी होते हैं। व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व संस्कारों द्वारा ही निर्मित होता है।नागरिकों के सामूहिक संस्कारों के परिणाम ही राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करते हैं। वास्तव में संस्कार-प्रणाली मानव निर्माण की आधार-शिला है। मनु स्मृति में कहा गया है 'निषेकादिश्म शानान्तो मन्त्रेयस्योदितो विधि:।' मनुस्मृति -16/2

अर्थात् मनुष्य के शरीर और आत्मा के उत्तम होने के निषेक अर्थात् गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि (मृत्यु के पश्चात् मृतक शरीर का विधि पूर्वक दाह करने) पर्यन्त 16 संस्कार किये जाते हैं, जो जीवन का परिमार्जन व परिष्कार करते हैं। शुभ संस्कार आत्मतत्व के मैल को धो देते हैं। प्रत्येक संस्कार-क्रिया के प्रारम्भ में ईश्वर की स्तुति प्रार्थना, स्वस्तिवाचन, शांति पाठ और अग्निहोत्र करना चाहिए।

शास्त्रों में निम्नलिखित 16 संस्कारों का विधान है -

गर्भाधान संस्कार - स्त्री के गर्भ धारण के उपलक्ष्य में यह संस्कार किया जाता है। इस अवसर पर दम्पत्ति सन्तान के जन्म पर्यन्त दाम्पत्य पालन का व्रत लेते हैं। तथा शुद्ध आहार-व्यवहार का वचन देते हैं। वैदिक संस्कृति में यह संस्कार नवीन आत्मा को निमंत्रण देने का पवित्र अनुष्ठान है।

पुंसवन संस्कार -यह संस्कार गर्भ धारण के पश्चात् तीसरे महीने में किया जाता है। इस समय बालक के भौतिक शरीर का निर्माण प्रारम्भ हो जाता है। इस अवसर पर माता को अधिक शयन, अधिक भाषण तथा खारी, तीखा, खट्टा, कड़वा न खाने तथा क्रोध, लोभ द्वेष आदिसे बचने का निषेध किया जाता है। तथा एक दूसरे को सदैव प्रसन्न रखने का उपदेश दिया जाता है।

सीमान्तोनयन संस्कार - यह संस्कार छठे महीने में किया जाता है जब बालक के मानसिक शरीर का निर्माण प्रारम्भ होता है । इस में माता के बाल संवारे जाते हैं।

सीमन्तोनयन संस्कार में माता के सम्मुख घी का कटोरा रखकर पिता पूछता है- किम् पश्यसि? माता कहती है - प्रजाम् पश्यामि अर्थात् मैं अपनी संतान को देखती हूं।

जातकर्म संस्कार - यह संस्कार जन्म के समय किया जाता है। दायी द्वारा नाड़ काटने तथा बालक के शरीर के मल को दूर करने के पश्चात् बालक को पिता की गोद में बिठाने के तदन्तर बालक की जीभ पर घी तथा शहद से 'ओ३म्' लिखा जाता है तथा उसके दाहिने कान मे 'वेदोसीति' बोला जाता है।

नाम करण संस्कार - यह संस्कार 11वें दिन या 101वें दिन अथवा एक साल के बाद बालक के जन्म लेने वाले दिन किया जाता है। नाम सुन्दर, कर्णप्रिय तथा सार्थक होना चाहिए। वालक के जीवन में जैसा लक्ष्य रखना है, तदनुकूल ही नाम रखना चाहिए। बालक को शुद्ध वस्त्र पहना कर उसकी माता हवन कुण्ड के समीन बालक के पिता के पीछे से आकर दाहिनी ओर जाकर बालक का मस्तिष्क उत्तर दिशा में रखकर बालक को पिता को दे और माता उसी प्रकार पति के पीछे होकर उत्तर भाग में पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाये तत्पश्चात् पिता बालक को उत्तर में सिर और दक्षिण में पैर रखकर अपनी पत्नी कोदे। माता बालक को लेकर शुभ आसन पर बैठे। जिस तिथि व जिस नक्षत्र में बालक का जन्म हुआ है, उस तिथि और उस नक्षत्र के नाम से घी व सामग्री की आहूति दें। नाम में य, र, ल, व में से एक वर्ण अवश्य हो।

निष्क्रमण संस्कार - पारस्कर-गृह सूत्र के प्रावधान के अनुसार चतुर्थे मासिनिष्क्रमिका अर्थात् इस संस्कार में बालक को चतुर्थ मास में जन्म तिथि के दिन अग्नि होत्र आदि के बाद शुद्ध स्थान व अनुकूल जलवायु में घर से पहली बार बाहर निकला जाता है। प्रात: काल शुद्धजल से स्नान कराकर तथा नवीन वस्त्र पहना कर बाहर ले जायें क्योंकि तब तक बालक की इन्द्रियां धूप व वायु को सहन करने में सक्षम हो जाती हैं।

अन्न प्राशन संस्कार - छठे माह में बालक का अन्न प्राशन संस्कार किया जाता है क्योंकि तब तक बालक की शक्ति अन्न पचाने योग्य हो जाती है। बालक को दही-घृत उक्त भोज्य पदार्थ खिलाना चाहिए।

चूड़ा कर्म संस्कार - इस को केश छेदन भी कहते हैं। बालक के जन्म से एक वर्ष अथवा अधिक से अधिक तीसरे वर्ष पहली बार मुंडन कराना चाहिए। यह संस्कार उत्तरायण काल में शुक्ल पक्ष में कराना चाहिए। बालक को नाई के सम्मुख पूर्वाभिमुख बिठाना चाहिए मुण्डन के पश्चात् मक्खन या दही की मलाई से बालकके सिर की मालिश करें। नाई को बालक के उतरे हुए केशों को जमीन में गाढ़ने का कहें। इस संस्कार का प्रयोजन बल, आयु तथा तेज की वृद्धि होना माना जाता है।

कर्ण भेद संस्कार - कान छेदने का यह संस्कार तीसरे अथवा पांचवें वर्ष में किया जाता है। संस्कार वाले दिन बालक को स्नान कराकर शुद्ध वस्त्र पहना कर संस्कार स्थल पर भेजें। कान या नाक के छेदने के पश्चात् छेद में सोने या चांदी की बाली पहनानी चाहिए। छिदे स्थान पर दवा लगा देनी चाहिए सुश्रुत में लिखा है कि रक्षा भूषण निमितं बालस्य कर्णोविध्येते अर्थात् बालक के कान छेदने का प्रमुख उद्देश्य है, बालक के कान में छेद करने से काई नस छिद जाती है जिसका संबन्ध आंतों से होता है, जिसके छिद जाने से हर्निया नहीं होता है।

उपनयन संस्कार - उपनयन संस्कार को यज्ञोपवीत संस्कार भी कहते हैं। आश्वलायन गृह सूत्र के अनुसार ब्राह्मण के बालक का जन्म से आठवें वर्ष में, क्षत्रिय के 11वें वर्ष में तथा वैश्य के बालक का 12वें वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिए शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ के अनुसार ब्राह्मण के बालक का बसंत ऋतु में, क्षत्रिय का ग्रीष्म ऋतु में तथा वैश्य के बालक का शरद ऋतु में यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिए। यह संस्कार शिक्षा के आरम्भ से पहले किया जाता है। 'उपनयन' का अर्थ होता है - बालक को गुरु के समीप ले जाना संस्कार से एक दिन पूर्व बालक को उपवास करना चाहिए। बालक को पूर्वाभिमुख बैठाकर आचार्य बालक के बायें कंधे के ऊपर कण्ठ के पास से दाहिने हाथ के नीचे कमर तक यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करता है।

वेदारम्भ संस्कार - वेदारम्भ संस्कार उसे कहते हैं, जिसमें वेदादि सम्पूर्ण शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए बालक नियम धारण करता है। यह संस्कार उपनयन संस्कार के एक दिन बाद यिका जाता है।

आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था के अनुकूल इस में वांछित संशोधन किया जा सकता है।प्राचीन काल में गुरुकुल में प्रविष्ट कराया जाता था। यह संस्कार गुरु-शिष्य का संबंध पिता-पुत्र के संबन्ध के समान ही निधारित करता है। इस संस्कार के समय आचार्य शिष्य को उपदेश देता है कि हे बालक आज से तेरा ब्रह्मचर्य काल आरम्भ होता है। ब्रह्मचर्य काल बचपन से 25 वर्ष आयु पर्यन्त होता है। यह विद्या के प्रारम्भ के साथ ही प्रारम्भ होता है। इस समय बालक को कहा जाता है कि आज से तू ब्रह्मचरी है। मन, वचन, कर्म से सदा पत्रि रहना, कभी आलस्य न करना, तामसी भोजन न करना, सदा बड़ों का आदर करना। सदा सत्य बोलना अधिक निद्रा, अति भोजन, निंदा, लोभ, मोह, भय, शोक को मत अपनाना, फैशन मत करना, कम बोलना,आज्ञा का पालन करना तथा सदैव अनुशासन में रहना, बड़ों का अभिवादन, इन्द्रियों का संयम तथा निरंतर विद्याध्ययन करना।

समावर्तन संस्कार - जब बालक ब्रह्मचारी वेद, शास्त्र, ज्ञान-विज्ञान का पूर्ण अर्जन करके व शिक्षालय छोड़ कर विवाह-विधान द्वारा गृहस्थ आश्रम में प्रवेश हेतु घर जाता है, उस समय समावर्तन संस्कार किया जाता है। इस संस्कार के पश्चात् ही विवाह-संस्कार की योजना प्रारम्भ होती है। इस संस्कार के समय ब्रह्मचारी अपनी मेखला और दण्ड को त्याग देता है इसमें आचार्य का सम्मान किया जाता है। ब्रह्मचारी घोषणा करता है कि पूज्य आचार्यने मुझ पर बहुत उपकार कियाहै जिसके लिये मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं।मैं परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना कता हूं कि मुझे सदैव सदमार्ग पर चलने की कृपा करें। मैं मानव मात्र की सेवा हेतु सदैव तत्पर रहूं। तत्पश्चात् आचार्य को पूर्ण सत्कार व सम्मान के साथ विदा किया जाता है।

...शेष अगले अंक में

-गौरी शंकर भारद्वाज,पूर्व विधायक

महर्षि दयानन्द के अनुयायी क्यों बनें ?

1. दयानन्द का सच्चा अनुयायी भूत-प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि कल्पित पदार्थों से कभी भयभीत नहीं होता। **2.** आप फलित ज्योतिष, जन्म-पत्र, मुहूर्त, दिशा-शूल, शुभाशुभ ग्रहों के फल, झूठे वास्तु शास्त्र आदि धनापहरण के अनेक मिथ्या जाल से स्वयं को बचा लेंगें । **3.** कोई पाखण्डी साधु, पुजारी, गंगा पुत्र आपको बहका कर आपसे दान-पुण्य के बहाने अपनी जेब गरम नहीं कर सकेगा। **4.** शीतला, भैरव, काली, कराली, शनैश्चर आदि अप-देवता, जिनका वस्तुत: कोई अस्तित्व ही नहीं है, आपका कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकेंगे। जब वे हैं ही नहीं तो बेचारे करेंगे क्या ? **5.** आप मदिरापान, धूम्रपान, विभिन्न प्रकार के मादक से बचे रह कर अपने स्वास्थ्य और धन की हानि से बच जायेंगे। **6.** बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, नारी-प्रताडना, पर्दा-प्रथा, अस्पृश्यता आदि सामाजिक बुराइयों से दूर रहकर सामाजिक सुधार के उदाहरण बन सकेंगे। **7.** जीवन का लक्ष्य सादगी को बनायेंगे और मित व्यवस्था के आदर्श को स्वीकार करने के कारण दहेज, मिलनी, विवाहों में अपव्यय आदि पर अंकुश लगाकर आदर्श उपस्थित करेंगे। **8.** दयानन्द का अनुयायी होने के कारण अपने देश की भाषा, संस्कृति, स्वधर्म तथा स्वदेश के प्रति आपके हृदय में अनन्य प्रेम रहेगा। **9.** आप पश्चिम के अन्धानुकरण से स्वयं को तथा अपनी सन्तान को बचायेंगे तथा फैशन परस्ती, फिजूलखर्ची, व्यर्थ के आडम्बर तथा तडक-भडक से दूर रहेंगे। **10.** आप अपने बच्चों में अच्छे संस्कार डालेंगे ताकि आगे चलकर वे शिष्ट, अनुशासन प्रिय, आज्ञाकारी बनें तथा बडों का सम्मान करें। **11.** आप अपने कार्य, व्यवसाय, नौकरी आदि में समय का पालन, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता को महत्त्व देंगे ताकि लोग आपको मिसाल के तौर पर पेश करें। **12.** वेदादि सद् ग्रन्थों के अध्ययन में आपकी रुचि बढेगी, फलत: आपका बौद्धिक क्षितिज विस्तृत होगा और विश्व-बन्धुता बढेगी। **13.** जीवन और जगत् के प्रति आपका सोच अधिकाधिक वैज्ञानिक होता चला जायेगा। इसे ही स्वामी दयानन्द ने ऋसृष्टिक्रम से अविरु) होनाश कहा है । आप इसी बात को सत्य मानेंगे जो युक्ति, तर्क और विवेक की कसौटी पर खरी उतरती हो । मिथ्या चमत्कारों और ऐसे चमत्कार दिखाने वाले ढोंगी बाबाओं के चक्कर में दयानन्द के अनुयायी कभी नहीं आते। **14.** दयानन्द की शिक्षा आपको एक परिपूर्ण मानव बना देगी । आप जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति के भेदों से ऊपर उठकर मनुष्य मात्र की एकता के हामी बन जायेंगे। **15.** निन्दा-स्तुति, हानि-लाभ, सुख-दु:ख आदि द्वन्द्वों को सहन करने की क्षमता आप में अनायास आ जायेगी। **16.** शैव, शाक्त, कापालिक, वैष्णव, ब्रह्माकुमारी आदि सम्प्रदायों के मिथ्या जाल से हटकर आप एक अद्वितीय सच्चिदानन्द परमात्मा के उपासक बन जायेंगे। **17.** आपकी गृहस्थी में पंच महायज्ञों का प्रवर्तन होगा जिससे आप परमात्मा, सूर्यादि देवगण, माता-पिता आदि पितृगण, अतिथि एवं सामान्य जीवों की सेवा का आदर्श प्रस्तुत करेंगे। क्या दयानन्द के अनुयायी बनने से मिलने वाले उपर्युक्त लाभ कोई कम महत्त्व के हैं ?

तो फिर देर क्यों ?

आज ही दयानन्द के सैनिकों में अपना नाम लिखायें ।

सन्दर्भ - 'दयानन्द-सन्देश' का फरवरी 2003 अंक,

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

पृष्ठ 5 का शेष **डॉ. श्यामा ...**

उपस्थित किया है जिसे स्वतन्त्र भारत, वर्तमान परिस्थितियों तथा अवस्थाओं में स्वकीय संस्कृति तथा सभ्यता की अमूल्य परम्पराओं के साथ समस्वर करके ही निर्माण कर सकता है। आज मुस्लिम लीग यह मांग कर रही है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' को जब्त कर लिया जाये क्योंकि इसके कुछ अंश कुछ मुसलमानों की दृष्टि में आपत्ति जनक हैं। अब यह सोचना आपका काम है कि ऐसी अनुचित और दुष्टतापूर्ण असहिष्णुता के प्रतीकार के लिये क्या उपाय किये जायें। वस्तुत: यह आन्दोलन ही स्वयं सत्य, साहस और विवेक के विचारों से परिपूर्ण उस ग्रन्थ को अधिकाधिक लोकप्रिय बनाने में सहायक होगा, जिसने लाखों आत्माओं को शक्ति व मुक्ति प्रदान की है और इस प्रकार इस ग्रन्थ ने जीवन-मुक्ति के उस भारतीय महालक्ष्य की सिद्धि में सहायता की है जिसके लिये उसके प्रणेता ने अपना जीवन लगाया और प्राणों की भी आहूति दी।

आर्य समाज के अनुयायियों के दृढ़ संगठन को जानते हुए ही मैं यह कहने का साहस करता हूं कि यदि हमारे धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप करने का कोई भी दुष्प्रयत्न किया गया तो उसे परिणाम की चिन्ता किये बिना साहस और संगठित प्रतिरोध के बल पर छिन्न-भिन्न कर दिया जायेगा। मैं तो यहां तक कहने को तैयार हूं कि सम्पूर्ण-हिन्दू जाति और उसके सम्प्रदाय-वस्तुत: धार्मिक मत-वादों के रहते हुये भी सभी विचार स्वातन्त्रय-प्रेमी-ऐसे हमले को चुनौती के रूप में स्वीकार करेंगे। हमें मुस्लिम लीग द्वारा की गयी ऐसी बेहूदी मांग के कारणों को भुला देना चाहिए। इसका कारण जहां एक ओर हमारे आपसी मतभेद और अपने पवित्र धर्म-ग्रन्थों आदि के प्रति उपेक्षा का भाव है, वहां दूसरी ओर एक भाग से पक्षपात करने की दुर्नीति भी है।

-अध्यक्षीय भाषण से साभार

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम : **ऋषि दयानंद की प्रारम्भिक जीवनी**
लेखक : **दयाल मुनि आर्य**
सम्पादक : **भावेश मेरजा**
पृष्ठ संख्या : **168**
प्रकाशक : **डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार (सत्यार्थ प्रकाशन न्यास) 1425, सेक्टर 13, अर्बन एस्टेट, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)**

स्वामी दयानंद के जीवन के विषय में आर्य जगत् को स्वामी जी के स्वलिखित आत्मचरित्र, पंडित लेखराम लिखित चरित एवं बाबू देवेन्द्र नाथ लिखित जीवन चरित से मालूम चलता है कि सन्यास धर्म का पालन करते हुये स्वामी दयानंद ने अपने पूर्व आश्रम के विषय में बहुत संक्षिप्त जानकारी दी थी जो थियोसोफिस्ट में प्रकाशित हुई थी। उस जानकारी के आधार पर पंडित लेखराम ने स्वामी जी का जन्म स्थान खोजने का प्रयास किया मगर उनको सफलता नहीं मिली। कालांतर में बाबू देवेन्द्र नाथ को ऋषि जन्मगृह एवं शिव मंदिर के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वामी जी के परिवारजन महाशय पोपटलाल द्वारा दयानंद जन्म स्थान निर्णय तथा टंकारा शताब्दी महोत्सव में दिये गये वक्तव्य में इसकी पुष्टि इस प्रकार से की गयी है-'ऋषि के जन्म स्थान का पता लगाने के लिये यहां कितने ही जिज्ञासु तथा अन्वेशक आ चुके हैं। जब पंडित लेखराम जी यहां आये थे तब तक हमें यही विदित था कि ऋषि दयानंद के जन्म स्थान का यथार्थ परिचय जानबूझ कर नहीं दिया था। कुछ साल बाद जब श्रीमान् मुकर्जी महोदय (बाबू देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय) यहां पधारे थे तब हमने अपने प्रथम अज्ञान पर पश्चाताप प्रकट करते हुये उक्त मुकर्जी महोदय को अपना वास्तविक परिचय देकर उन्हें ऋषि दयानंद के इन दोनों स्मृति चिह्नों का दर्शन करा दिया तथा इस विषय में हमें जितना ज्ञान था वह सब भी उन्हें दे दिया।''

इस पुस्तक में जिन मुख्य भ्रांतियों का दयाल मुनि जी द्वारा शोधपूर्ण निवारण करने का प्रयास किया गया है उनमें ऋषि जन्मग्राम टंकारा अथवा जीवापुर ग्राम, ऋषि के वंश वृक्ष, शिवरात्रि को जिस मंदिर में पूजा की गयी थी उसका निर्णय, ऋषि के पिता, माता, सम्बन्धियों का नाम आदि पर शोधपूर्ण विचार किया गया है। इस पुस्तक की विशेषता पोपटलाल कल्याणजी रावल एवं ऋषि के बाल सखा इब्राहिम द्वारा दिये गये वक्तव्य को पुन: प्रकाशित कर सामान्य जन के लिये सुलभ करवाना है। स्वामी जी का 1857 संग्राम में भाग लेना मोरवी नरेश से सम्बन्ध, टंकारा की फेरी आदि पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। पुस्तक पढ़कर हमें एक ही प्रेरणा मिलती है कि स्वामी दयानंद का जीवन चरित्र लिखने से पहले वृहद चिंतन एवं शोध की आवश्यकता है। दो-चार पुस्तकों को सामने रखकर नत्थी कर देना पुस्तक लेखन नहीं कहलाता। एक कार्य जिसके करने की प्रेरणा इस पुस्तक से मिलती है वह है ऋषि दयानंद के वंश की सम्पूर्ण एवं प्रामाणिक जानकारी को प्राप्त करने के लिये वाराणसी के दशाश्वमेध घाट पर गुजरातियों के पण्डे श्री अंजनी नंदन मिश्र, कचौरी गली, पशुपति शिव मंदिर के पास से सैकड़ों वर्ष पुरानी बहियों को देखा जाना चाहिए, क्योंकि टंकारा से जब भी कोई बनारस आता था तो इन बहियों में सम्पूर्ण वंश का परिचय लिखवा देता था। यह कार्य इतना सरल नहीं है क्योंकि करीब 200 वर्ष पुरानी बहियों को देखा जाना है। भविष्य में भी ऐसी शोधपूर्ण एवं स्तरीय पुस्तकें आर्य समाज में छपें यही हमारी अभिलाषा है।

-डॉ. विवेक आर्य

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

29 जून से 05 जुलाई, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 2 जुलाई/3 जुलाई, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 1 जुलाई, 2015

आर्यसमाज की मिसकॉल सेवा आरम्भ 9211990990

अपने मोबाइल से मिस कॉल दें और पाए निःशुल्क जानकारी

एस.एम.एस. से जानकारी चाहने वाले सज्जन इस नम्बर पर मिसकॉल करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज के प्रचार हेतु मिसकॉल सेवा आरम्भ की गई। आप इस सेवा का लाभ उठाएं। यदि आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा आर्यसमाज से संबंधित किसी भी प्रकार की कोई जानकारी-सूचना प्राप्त करना चाहते हो तो 09211990990 पर मिसकॉल करें। आपके द्वारा कॉल करते ही कॉल कट जाएगी और आपको **धन्यवाद** संदेश प्राप्त होगा तथा आपका मो. नं. एस.एम.एस. सूची में अंकित हो जाएगा। **-महामंत्री**

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 3 का शेष

महर्षि दयानन्द ...

में अधिक है, वही वृद्ध पुरुष कहाता है, ब्रह्ममण ज्ञान, क्षत्रिय बल से, वैश्य धन-धान्य से और शुद्र जन्म अर्थात् अधिक आयु से वृद्ध होता है। महर्षि मनु के इन सभी वचनों जिनका समर्थन महर्षि दयानन्द ने किया है, ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि कहलाने वाले मानने वालों को विचार करना चाहिये। इससे यह अनुमान होता है कि आज के समाज में ब्राह्मण व क्षत्रियादि कोई है क्योंकि यह सभी वेद एवं वैदिक शास्त्रों के ज्ञान से रहित व आचरण से अपरिचित व हीन हैं। महर्षि दयानन्द के जीवन कल्याण विषयक सर्वोत्तम विचारों को जानने के लिये हम प्रत्येक पाठक व व्यक्ति को सत्यार्थ प्रकाश का राग- द्वेष- आग्रह- हठ -स्वार्थ से ऊपर उठकर अध्ययन करने का निवेदन करते हैं। हमने अपने अध्ययन में यह पाया है कि संसार में सत्यार्थ प्रकाश से बढ़कर जीवन के कल्याण की शिक्षा देने वाला अन्य कोई ग्रन्थ नहीं है। **-मनमोहन कुमार आर्य**

चुनाव समाचार

आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद

प्रधान - **श्री श्रद्धानन्द शर्मा,**
मंत्री - **श्री सत्यवीर चौधरी,**
कोषाध्यक्ष - **श्री शशिबल गुप्ता**

आर्य समाज मन्दिर सागरपुर, नई दिल्ली-110046

प्रधान - **श्रीमति विद्यावती आर्या**
मंत्री - **श्री मान्धाता सिंह आर्य**
कोषाध्यक्ष - **श्री ब्रह्म प्रकाश आर्य**

आर्य समाज डी ब्लाक विकासपुरी

प्रधान - **श्री हरिश चन्द्र कालरा**
मंत्री - **श्री बलदेव राज सचदेवा**
कोषाध्यक्ष - **श्री ओमप्रकाश घई**

आर्य समाज पंखा रोड सी ब्लॉक का उपक्रम एच. एल.एम. डेण्टल क्लीनिक व इम्पलांट सेण्टर

सी-3 ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली-110058, दूरभाष 011-25544486

हमारी विशिष्ट सुविधायें उपलब्ध हैं-

Kids Dentistry, Porcelain Veneers &Laminates, Smile Designing, Tooth Jewellery, Metal Free Dentistry, Full Mouth Rehabilitation, Single Visit Root Canal Treatment, Orthodonties (Metal & Invisible Braces), Gum Treatment

समय प्रातः 10 से 1.30 व सायं 5 से 7.00 बजे

अन्तर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं का आयोजन

नारा लेखन प्रतियोगिता	07/07/2015 (मंगलवार)	दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार, नई दिल्ली- 110095
एकांकी प्रतियोगिता	17/07/2015 (शुक्रवार)	बिड़ला आर्य कन्या सी.से. स्कूल बिड़ला लाईस, दिल्ली-110007
मंत्र लेखन प्रतियोगिता	22/07/2015 (बुधवार)	महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, शादीपुर खामपुर दिल्ली-110008
समूह गान प्रतियोगिता	28/07/2015 (मंगलवार)	महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर सुभाष नगर, दिल्ली

सभी आर्य विद्यालयों के अधिकारियों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, **E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह